

असंभव को संभव बनाने की तरकीब

मानव का मन सकारात्मक विचारों से ज़्यादा नकारात्मक विचारों का सृजन करता है, विचारों के सृजन में मन विवेक का ताबेदार (नियंत्रण) रहता नहीं। परिणाम स्वरूप किसी कार्य से सुख मिलेगा या दुःख उसका विचार करते वक्त मनुष्य दुःख, आफत, कठिनाइयों, मुश्किलातों को ज़्यादा महत्व देता है। हम ये बात भूल जाते हैं कि हम अपने मन के राजा हैं, गुलाम नहीं। मन हमें परेशान करता है, दुःख देता है और अपने अनुसार चलाता है। हम इन स्थितियों को नियति मानकर, भाग्य का निर्माण मानकर विचारों की शुद्धि की प्रक्रिया में नहीं पड़ते। शुद्ध विचार यानि बिना धुँएँ की अग्नि, संवादिता की सुरावली, पवित्रता का महायज्ञ। इस यज्ञ में जो बेकाम की वस्तुओं को भस्मीभूत कर सके, वे ही जीवन में उर्ध्वगति को पा सकेंगे।

मनुष्य को बिना मांगे गिफ्ट मिलती है, तो वह है नकारात्मक सलाह या नकारात्मक विचार।

केमरोन सी टेलर के मुताबिक 'मनुष्य के जीवन में प्रथम अठारह वर्ष के दौरान एवरेज में व्यक्ति 1,48,000 से भी ज़्यादा समय ना कहने में आते हैं।

हम निरंतर माता-पिता, मित्रों, शिक्षकों, टी.वी. और सहकारियों को कहते सुनते हैं कि हम यह काम नहीं कर सकते हैं। इस तरह मन में बार-बार ऐसे विचार आते रहने से मनुष्य अपनी क्षमता के अनुपात में कम सिद्धि हासिल कर सकता है। इस तरह की मनोवृत्ति हो जाने से हम बहुत बार ऐसे मान लेते हैं कि हम महान नहीं बन सकते। इससे जुड़े विचारों का विष हम मन को पिलाते हैं और मन उनका खतरनाक विष में रुपांतरण कर हमें वापिस देता है। वो समस्याओं का निराकरण करने के बजाय और ही आना-कानी करता है। परिणामस्वरूप वो समस्याग्रस्त रहता है। जबकि निवारण तो उनके हाथ में होता है। इसलिए हमें 'मन' को उत्कृष्ट बनाना चाहिए न कि कमज़ोर। उत्कृष्ट मन समस्याओं को समाप्त कर देता है।

सुनने में आता है कि उदासी और उथल-पुथल युक्त, धूमसंपूर्ण और दूसरों को असंभव लगे, ऐसे समय पर चर्चिल ने आशावाद और दृढ़ निर्णय के साथ प्राईम मिनिस्टर का पद स्वीकार किया था। जिस दिन उसने प्राईम मिनिस्टर का पद स्वीकार किया था; उस दिन चर्चिल ने लिखा था : मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं जानता हूँ कि मैं अपनी नियति के साथ चल रहा हूँ। मेरा समग्र भूतकाल मुझे इस कठिन घड़ी के लिए तैयार करने के लिए ही था। मुझे विश्वास था कि मैं निष्फल नहीं होऊँगा।

केमरोन सी टेलर ने महान लोगों के आठ लक्षण का वर्णन किया है - 1. जवाबदार, 2. सर्जक, 3. स्वतंत्र, 4. नम्र, 5. ईमानदार, 6. आशावादी, 7. दूरदृष्टा, 8. सातत्वपूर्ण।

सफलता का ऐड्रेस और रहस्य, सफल होने के दृढ़ निर्णय के बंद कवर में लिखा है। हम उसे धीरज से पढ़ने के बदले, ऊपर-ऊपर से नज़र कर ऐड्रेस को फाड़ देते हैं और फिर दुनिया से पूछने के लिए निकल पड़ते हैं कि सफलता का रहस्य क्या है? हमें स्वयं से पूछना चाहिए कि मैं किसलिए खुद को कमज़ोर या निकम्मा मान रहा हूँ? अगर मैं निकम्मा ही होता तो कुदरत ने मुझे मनुष्य क्यों बनाया होता!

मनुष्य का विवेक जागृत हो तो कैसा भी धृष्ट कार्य करने से रुक जाता है। एक प्रेरक 'नीति कथा' में एक सुंदर कहानी प्रस्तुत होती है। बोधिसत्व नाम का एक बालक ब्राह्मण कुल में वाराणसी में जन्मा था। बड़ा होने पर विद्या प्राप्त करने के लिए एक आश्रम में रहकर अभ्यास करने लगा। आश्रम के आचार्य एक विलक्षण प्रकार के तपस्वी थे। वे अपने शिष्यों को सदाचारी, सत्यनिष्ठ, सद्ब्यवहारी बनें, ऐसी शिक्षा देते रहते थे। उस आचार्य की पुत्री की उम्र जब विवाह करने की हुई तो उन्होंने विचार किया कि आश्रम के शिष्यों में से जो शीलवान होगा उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कराऊँगा। उसके लिए उन्होंने अपने बुद्धिवान शिष्यों को बुलाया और कहा : 'मैं अपनी पुत्री के लिए सुयोग्य वर पसंद करना चाहता हूँ। शर्त एक ही है, आपमें से जो कोई अपने सम्बंधियों की नज़र से बचाकर चोरी-छुपे वस्त्राभूषण ले आयेगा, मैं उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह



- ब्र. कु. गंगाधर

हर बात एक्सपेक्ट करो, एक्सपेक्ट नहीं करो

अकेले होते भी अनेकों के साथ मिलकर अगर चलते हैं तो कोई मुश्किल नहीं है। कोई कहता है कि बड़ा मुश्किल है तो मुझे दया आती है यह सिर्फ कहता है, पर करता कुछ नहीं है। हमेशा रोता रहता है। किसी की बात को समझने के लिए बड़ी दिल हो क्योंकि आजकल कोई किसी की बात को समझने की कोशिश नहीं करता है। मुस्करा तभी सकते हैं जब बड़ी बात को छोटा बनाना आता है, छोटी को बड़ा नहीं बनाओ। छोटी बात को रोचके बड़ा बनाते हैं तो जो खुद ही बड़ा बनाता है वह औरों पर क्या दया करेगा? उसका माइण्ड बिचारा एक मिनट भी शांत नहीं होता है। दिल में एक मिनट के लिए भी किसी के प्रति प्यार नहीं पैदा होता है। मन में शांति, दिल में प्यार हो। उसके लिए ऐसी बातों को समझके पहले अपने ऊपर रहम करो। दया, रहम, कृपा, आशीर्वाद, इनसे भी सूक्ष्म सकाश है। तो जिसके पास सुख होगा, वो देने बिगर रह नहीं सकेगा। न दुःख देना, न लेना, इसको कहा जाता है दया, रहम, कृपा की। प्रैक्टिकली अनुभव जो है वो औरों को सुख देता है। इसके लिए अपने मन को अंदर से सच्चाई, प्रेम, खुशी से शक्तिशाली बनाओ, खुद को प्यार करो। कइयों को खुद को प्यार करने के लिए टाइम नहीं है, तो औरों को कैसे प्यार करेंगे इसलिए पहले मैं खुद को प्यार करूँ। परमात्मा बाप ने शिक्षाओं को धारण करने के लिए जो शक्ति दी है, उससे जो न काम की बात है वो अंदर जाती नहीं है, इसमें बाहर की बात अंदर न जावे - यह है अपने

से प्यार करना, अपने पर दया करना। अगर सुबह से लेकर यह बात... वह बात है... तो वो क्या दया करेगा? अरे, मेरा धर्म है शान्त रहना। सच्चाई और प्रेम से सबको रिगार्ड देना, रिस्पेक्ट देना, इससे औरों के मन में आपके प्रति रिगार्ड पैदा होगा। पहले परिवर्तन का रिकॉर्ड अच्छा हो। हमारा काम है सेल्फ रिस्पेक्ट में रहना, सबको रिस्पेक्ट देना। छोटों को स्नेह दो, बच्चे बिचारे क्यों ऐसे नाराज़, दुःखी रहते हैं क्योंकि बच्चों को बचपन से ले करके माँ-बाप का स्नेह नहीं मिलता है। भाई-बहनों का प्यार नहीं मिलता है। छोटे बच्चों में भी ईर्ष्या होती है, मम्मी इसको ज़्यादा प्यार करती है, मेरे को नहीं। मैं तो संसार समाचार से दूर रहती हूँ पर प्रैक्टिकल क्या हो, यह भावना है। सभी आज के दिन ऐसा अपने आप में ले लो, जो हज़ारों को दे सको। इसके लिए अपने को ठीक से टाइम दो, इसमें एक्स्ट्रा समय देने की बात नहीं है या इसमें टाइम लगने की भी बात नहीं है। सिर्फ समय को यथार्थ सफल करने की बात है। शान्त में रहने के लिए बीच में कोई पुरानी बात का संकल्प यान न आवे, तो वो वायब्रेशन बड़े पावरफुल होते हैं, जिससे कदम-कदम पर सावधान रहने की समझ मिली है, उनके प्रति सम्मान दिल से निकलता है। और कोई कहे यह भी ऐसे करता है या ऐसे किया है, तो यह है डिसरिगार्ड। जिसको जो कहना व करना है, करे, पर मैं शान्ति और प्रेम नहीं छोड़ूँ। सामने वाला कितना भी कुछ बोले, पर मेरी

शक्ल चेंज न हो। ऐसे नहीं क्या बोलती हो? तो इसमें हर बात एक्सपेक्ट करो, एक्सपेक्ट नहीं करो (स्वीकार करो लेकिन उम्मीदें नहीं रखो)। मैं किसी के लिए कुछ एक्सपेक्ट करूँ और वो और कुछ करे तो मैं सेल्फ रिस्पेक्ट में नहीं रह सकूँगी। सेल्फ रिस्पेक्ट में रहने के लिए बहुत अच्छा मटेरियल है, उसको यूज करो तो खुशी जैसे खुराक के मुआफिक काम करती है। सूक्ष्म है, मैं अपनी सीट पर सेट रहूँ और कभी अपसेट न हो जाऊँ। ज़रा भी मेरे फेस में चेंज न आवे। आजकल देखा गया है ईर्ष्या वश सुखी को देख सहन नहीं करते, दुःखी को मदद नहीं करते। सारे विश्व में इस प्रकार का व्यवहार हो इंसान का जो दुःख, अशांति, हिंसा चली जाये। इसके लिए जो सुख हमने पाया है वह वायब्रेशन सब तक पहुंचे। बुद्धि बेहद में हो, कोई मनी मान की भूख नहीं है। मुझे मनी मिले, मान मिले तो वह निष्काम सेवाधारी नहीं है। सेवाधारी माना सच्ची दिल, बड़ी दिल। रिटर्न क्या दे रहे हैं, ऐसा ख्याल व कोई एक्सपेक्ट नहीं करना है। परंतु यह भी बाबा ने बताया है बच्चे, तुम सेवा करते चलो, आखिर जिसके सामने कोई परीक्षा आती है, तो यही घड़ी याद आयेगी, यह संगठन याद आयेगा। उसमें पेशेन्स, पीस, लव प्रैक्टिकली लाइफ में हो।



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका



दादी हृदयमोहिनी
अति. मुख्य प्रशासिका

हम शिव बाबा के उम्मीदों के सितारे हैं। भगवान कहते हैं कि मेरी उम्मीदों को पूरा करने वाले यह उम्मीदों के सितारे हैं। भगवान का निश्चय हमारे में है, तो हम सोचें कि जहाँ भगवान का निश्चय है, वहाँ तो निश्चय में विजय है ही। दूसरा बाबा ने हम सबको कहा आशाओं के दीपक हो, जैसे दीपक सदा चाहे खुद अंधियारे में रहे लेकिन दूसरों को रोशनी देता है। लेकिन हम दीपक ऐसे हैं जो स्वयं भी रोशनी में रहते हैं और दूसरों को भी रोशनी देते हैं। बाबा की यही आश है कि मेरा एक-एक बच्चा राजा बच्चा बने। एक-एक बच्चा मेरे समान बने। बाबा से हमारा प्यार है तो जिससे प्यार होता है उसके लिए कुछ भी करना, कुछ भी मानना सहज हो जाता है। तो बाबा को प्यार का रिटर्न और कुछ नहीं चाहिए लेकिन यह रिटर्न ज़रूर चाहिए कि बच्चे बाप समान बनें। हम सबका बाबा से सच्चे दिल का प्यार है, सिर्फ एक प्यार शब्द ही ले लो, प्यार के पीछे दुनिया भी क्या नहीं कर रही है। वह तो देह का झूठा प्यार है

शुभभावना रख दें शिक्षा

लेकिन हमारा तो भगवान से प्यार है, कोई महान आत्मा, धर्म आत्मा से भी नहीं है, परम आत्मा से हमारा प्यार है। और हमको बाबा ने इतना प्यार दिया है, उस प्यार का हम सबने अनुभव किया है। तो उस प्यार का रिटर्न व निशानी यही है कि जो बाप का संकल्प है वह हर बच्चे का संकल्प हो। ब्रह्मा बाबा को तो हमने प्रैक्टिकल देखा। बापदादा का हर समय संकल्प क्या रहा? शुभभावना, शुभकामना हर बच्चे के प्रति रही। चाहे कोई कैसा भी हो लेकिन ब्रह्मा बाबा ने जैसे हर बच्चे को अपना समझ करके, कमी पर समझाया, इशारा दिया, लेकिन कमी को बार-बार देखकर वर्णन नहीं किया। ब्रह्मा बाबा कभी भी किसी बच्चे को डायरेक्ट शिक्षा नहीं देते थे। लेकिन बाबा मुरली में कह देता था और मुरली में ऐसा कहता था कि आज बाबा ने मेरे ऊपर मुरली चलाई। लेकिन समझा मुरली चला करके फिर कमरे में गया, और हम बाबा के सामने गई तो बाबा कभी महसूस नहीं होने देगा कि आज बच्चे के ऊपर मुरली चलाई। और ही कहेगा, आओ बच्ची, बैठो बच्ची। तो बाबा भले शिक्षा देता था लेकिन दिल में नहीं रखता था। और ही स्वमान में

स्थित करा देता था। बाबा कभी उस बात को दिल में नहीं रखता था। दिल में फिर भी शुभभावना और शुभकामना रही। शिक्षा देना, इशारा देना ठीक है लेकिन शुभभावना रख करके इशारा देना, वह और चीज़ है। कार्यक्षेत्र में बातें तो होती हैं और होंगी, ऐसा नहीं है बातें खत्म हो जायेंगी। बातें तो बढ़ेंगी। बाबा के पास कई बच्चों का यह संकल्प आता है कि पहले शुरु शुरु में यह बातें नहीं थीं। अभी दिन-प्रतिदिन निगेटिव बातें बढ़ रही हैं। तो बाबा ने कहा कि देखो कई बीमारियां ऐसी होती हैं जो खत्म होने के पहले और ही बाहर निकलती हैं। बाहर निकलकर ही खत्म होती हैं। तो 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्तू यहाँ ही करना है क्योंकि धर्मराजपुरी में तो हमको जाना नहीं है। चाहे तन से, चाहे मन से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से करना तो है ही। कई कहते हैं कि हमारे सेंटर या साथी थोड़े परिवर्तन हो जायें तो मेरी अवस्था बहुत ऊँची उठ सकती है लेकिन बाबा ने जवाब दिया है यह सेंटर ही आपके पेपर हॉल हैं और पेपर हॉल में पेपर होना आवश्यक है। पेपर हमें अनुभवी बनाता है।